

ग्रसाषारग

EXTRAORDINARY

भाग II—लण्ड 3—उपलण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं॰ 203]

नई बिल्ली, शनिवार, मई 30, 1970/ज्येष्ठ 9, 1892

No. 203]

NEW DELHI, SATURDAY, MAY 30, 1970/JYAISTHA 9, 1892

इस भाग में भिन्न पुष्ठ संख्या वी जाती है जिससे कि यह ग्रलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue and Insurance)

ORDER

New Delhi, the 30th May 1970

S.O. 1983.—Whereas, in relation to the classes of claims mentioned in the Schedule hereto annexed, the Central Government is satisfied that it is customary to entrust the work of survey or loss assessment to any person other than a licensed surveyor or loss assessor, or it is not practicable to make any survey or loss assessment;

Now, therefore, in exercic of the powers conferred by sub-section (10) of section 64 UM of the Insurance Act, 1938 (4 of 1938), the Central Government hereby exempts the classes of claims mentioned in the said Schedule from the operation of the said section.

SCHEDULE

- 1. Claims under loss of profits insurance.
- 2. Claims under policies in respect of which documentary evidence of the value of the loss is available in the form of Police Reports, short-landing or non-delivery certificates issued by Port Trusts, Railways or other public or semi-Government authorities, claims in respect of which excise authorities give a certificate for dutiable items and sling loss claiming certified by Harbour authorities.
 - 3. Claims of General Average under marine policies.

- 4. Claims of total loss or constructive total loss under agreed value insurance policies or valued policies as defined in section 29 of the Marine Insurance Act, 1963 (11 of 1963).
- 5. Claims under policies of motor vehicle insurance wherein the claim is on account of injury or death to third parties.
 - 6. Claims under personal accident policies.
- 7. Claims under sickness insurance policies, disability insurance policies, hospitalisation policies and Workmen's Compensation Benefit Policies.
- 8. Claims under public liability policies including third party liability, professional indemnity, products liability and personal liability.
 - 9. Claims under Aviation Hull insurance policies.
- 10. Claims under Marine Hull insurance policies which are required to be surveyed by Lloyds Surveyors.
 - 11. Claims under engineering insurance policies.
 - 12. Claims under Money insurance including cash in transit policies.
- 13. Claims under All-risks and Burglary insurance policies on personal effects and jewellery.
- 14. Claims under Race Horses insurance policies and Live-stock insurance Policies.
 - 15. Claims in respect of loss or damage to crops, trees and forests.
 - 16. Claims in respect of loss or damage to tea in transit from gardens in India.
- 17. Claims under policies of the nature of Bonds and Guarantees including fidelity guarantees, Bankers' Blanket policies, credit insurance, and under policies insuring contractual liability.
 - 18. Claims under Contingency insurance policies.
- 19. Claims in respect of which the amount of claim is determined by recognised and well-established conventions or under agreements.
 - 20. Claims the amount of which has been adjudicated upon or decreed by courts.

[No. F. 51(15)-INS.I/69.]

A. RAJAGOPALAN.

Officer on Special Duty and Ex-Officio Joint Secy.

वित मंत्रालय

(राजस्व ग्रोर बीमा विभाग)

भ्रादेश

नई दिल्ली, 30 मई 1970

एस० म्रो० 1983.—-यतः इससे उपाबद्ध अनुसूची में वर्णित दायों के वर्गों के सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार का यह समाधान हो गया है कि सर्वेक्षण या है हि निर्धारण का कार्य अनुमाप्राप्त सर्वेक्षक या हानि निर्धारक में भिन्न किमी ध्यक्ति को मौपना कृदिगत है, अन्यया कोई भी सर्वेक्षण या हानि निर्धारण करना साध्य नहीं है:

श्चतः श्रव, बीमा ग्रधिनियम, 1938 (1938 का 4) की घारा 64 प ड़ की उपधारा (10) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए , केन्द्रीय सरकार उक्त ग्रतुसूची में वर्णित दावों के वर्गों को उक्त घारा के प्रवर्तन से एतदद्वारा छूट देनी है ।

शनुसूची

- 1. लाभों की हानि के बीमे के प्रधीन दावें।
- 2. उन पालिसियों के अधीन वे दाये जिनके बारे में हानि के मूल्य का दस्तावेजी साक्ष्य पुलिस रिपोटों, पत्तन न्यासों, रेलों या अन्य लोक प्राधिकारियों या अर्ध सरकारी प्राधिकरियों द्वारा जारी किए गए न्यून उतरान के या अपरिदान के प्रमाण पत्नों के रूप में उपलब्ध है, वे दावे जिनके बारे में उत्ताद शुल्क प्राधिकारी शुल्क योग्य मदों के लिए प्रमाण पत्न देते हैं तथा बन्दरगाह प्राधिकारियों द्वारा प्रमाणित स्लिंग हानि के दावे।
- सामुद्रिक पालिसियों के श्रधीन साधारण श्रांसत के दावे ।
- 4. सामुद्रिक बीमा श्रिधिनियम, 1963 (1963 का 11) की धारा 29 में परिभाषित सहमत मूल्य की बीमा पालिसियों या मूल्यांकित पालिसियों के श्रधीन कुल हानि के या श्रान्वयिक कुल हानि के दावे ।
- 5. मोटरगाड़ी बीमा की पालिसियों के श्रधीन दावे जिनमें दावा पर पक्षकारों को हुई क्षिति या मृत्यु के कारण है।
- वैयक्तिक दुर्घटना पालिमियों के श्रधीन दावे ।
- बीनारी बीमा पालिसियों, नियोंग्यता बीमा पालिसियों, श्रस्पताल दाखला पालिसियों श्रीर कर्मकार प्रतिकर फायदा पालिसियों के श्रधीन दावे ।
- 8. लोक दायित्व पालिसियों के श्रधीन दात्रे जिसके श्रन्तर्गत पर पश्रकार दायित्व, वृत्तिक क्षतिपूर्ति, उत्पाद दायित्व और वैसक्तिक दायित्व है।
- 9. विमानन 'हल' बीमा पालिसियों के अधीन दावे।
- 10. सामुद्रिक 'हल' बीमा पालिसियों के अधीन दावे जितकी बाबत यह अपेक्षित है कि जनका सर्वेक्षण लायडस सर्वेक्षक द्वारा किया जाए।
- 11. इंजीनियरिंग बीमा पालितियों के श्रधीन दावे।
- 12 धन बीमा जिसके श्रन्तर्गत श्रभिवहन-में-नकदी पालिसियां हैं; के श्रधीन दावे।
- 13. वैयक्तिक बीज बस्त और रत्नाभृषण विषयक समस्त--जीखिम और मेंधमारी वीमा पालिसियों के अधीन दावे।
- 14. दौड़ के घोड़ों की बीमा पालिसियों और पश्चत बीमा पालितियों के श्रधीत दावे ।
- 15. फमलों, वृक्षों श्रीर बनों को हुई हानि या नुकसान के बारे में दावे।
- 16. भारत में चाय बागों से अभिवहत में चाय को हुई हाति या तुकसात के बारे में दावे।
- 17- बन्धनतों और प्रत्साभृतियों, जिनके ग्रन्तर्गत विश्वस्तता प्रत्यामृतियों हैं, की प्रकृति की पालिनियों, बेकार की सर्वप्राही (बनैकिट) पानिनियों प्रत्यव बीमा के प्रजीत और मंत्रिदागत दायित्व का बीमा करने वाली पालिसियों के ग्रवीन दावें।

- 1.8. श्राकस्मिकता बीमा पालिसियों के श्रधीन दावें।
- 19. वे दावे जिनके बारे में दावे की रकम मान्यता प्राप्त और मुस्थापित श्रमिममयों द्वारा या करारों के अधीन श्रवधारित की जाती है।
- 20. वे दावे जिनकी रकम न्यायालयों द्वारा न्याय निर्णीत या डिकी । हई है ।

[मं०फा० 51 (15)—इंग्यो० I/69] ए० राजगोपालन, विशेष-कार्य प्रिक्षिकारी तथा पदेन संयुक्त सचिव ।